दर्शन

डेन्मार्क

डेन्मार्क
के
कुछ प्रसिद्ध लेख
१—संक्षिप्त इतिहास
२—प्राकृतिक दशा
३—जलवायु तथा वनस्पति
४—व्यवसाय
५—उपज तथा व्यापार
६—डेन्मार्क का डह्लगार्ड

दिसम्बर १९४०] **देश-दर्शन** [पौष १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] **डेन्मार्क** [संख्या ६

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ

संक्षिप्त इतिहास

वाइकिंग लोगों के पहले डेनमार्क के इतिहास का पता नहीं लगता है। पहली शताब्दी में डेन लोग शायद स्कैण्डीनेविया प्रायद्वीप के दक्षिण की ओर बसे थे। उस समय स्काने प्रान्त उनका प्रधान केन्द्र था। उस समय डेन लोगों की गणना बाल्टिक प्रान्त के लोगों में होती थी। पांचवीं छठीं सदी में डेन लोगों ने जटलैण्ड और उसके समीपवर्ती द्वीपों पर अधिकार जमाया। उसी काल में ऐंगलीकन लोग इंगलैण्ड में गये थे।

आठवीं सदी में जो डेनमार्क के राजा थे वे अपने को देवताओं की सन्तान कहते थे। उनके अधिकार में स्काने, ज़ीलैण्ड और समीपवर्ती द्वीपसमूह तथा जटलैंड का उत्तरी भाग था। लीरे के समीप राजा के महल थे।

जब चार्लेमन का राज्य उत्तर की ओर फैला तो उसका तथा उसके उत्तराधिकारियों का डेनमार्क के राजा से सम्बन्ध आरम्भ हुआ। उस समय डेनमार्क के राजघराने के लोगों में राज्य के लिये झगड़ा हुआ करता था। इसलिये राजघराने वाले सम्राट से सहायता मांगा करते थे।

दसवीं सदी के आरम्भ से डेनमार्क का मुख्य

इतिहास आरम्भ होता है। गोर्म नामक राजा ने डेन-मार्क राजघराने की नींव डाली उसकी स्त्री का नाम थीरा था। वह अपने प्रजा सम्बन्धी कार्यों के लिये प्रसिद्ध है। गोर्म के पुत्र का नाम हेराल्ड था। उसने

क्रिश्चियबोर्ग का दुर्ग

समस्त डेनमार्क और नार्वे को विजय किया और डेन जाति को ईसाई बनाया। वाइकिंग्स जाति का संगठन भी इसी राजा ने किया था जो उत्तरी योरुप में सब से अधिक शक्तिशाली सैनिक जाति हो गई थी। हेराल्ड

के पुत्र का नाम स्वेन था। स्वेन ने डेनमार्क को बहुत शक्तिशाली बनाया और उसकी गणना योरुप के बड़े राष्ट्रों में होने लगी। स्वेन के पुत्र का नाम कैन्यूट ग्रेट (बड़ा) था। कैन्यूट का नाम इँगलैण्ड के इतिहास में प्रसिद्ध है। कैन्यूट के समय में डेनमार्क योरुप के पश्चिमी राष्ट्रों के सामना करने योग्य हो गया था और वह उन्हें राजनैतिक मामलों में चुनौती देने लगा था। उसके बाद डेनमार्क स्कैण्डीनैविया में सम्मिलित हो गया और वह नार्वे के राजों के अधिकार में हो गया था। डेनमार्क का अंतिम राजा स्वेन एस्ट्रिथसन था जिसने एँग्लो डेनिश राजा को अंतिम बार विजय करने का प्रयत्न किया था। स्वेन की मृत्यु १०७४ ई० में हुई थी। उसके पश्चात् डेनमार्क बाल्टिक राष्ट्रों में गिने जाने लगा था।

ग्यारहवीं सदी में डेनमार्क ने अपने राष्ट्रीय चर्च (गिरजे) का संगठन किया और धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयत्न किया। लुण्ड का तीसरा आर्कबिशप (बड़ा पादरी) अब्सालोन था। वह डेनमार्क का प्रथम बड़ा राजनीतिज्ञ माना जाता है। अब्सालोन ने वाल्डेमार प्रथम और कैन्यूट चतुर्थ को रुपये से सहायता

की कि वह राजे डेनमार्क को बाल्टिक राष्ट्रों में सब से अधिक शक्तिशाली बना देवें ।

• डेनमार्क के इतिहास में वाल्डेमार्स राजाओं का समय बहुत प्रसिद्ध है । वाल्डेमार्स राजाओं के कारण

होजब्रो स्क्वैर (चौराहा) सामने एब्सालोन की मूर्ति है ।

डेन जाति स्कैन्डीनैविया में अधिक प्रभावशाली आने जाने लगी थी । उसके दूसरे कारण यह भी थे कि डेन जाति के पास उपजाऊ तथा धनी भूमि थी और पश्चिमी

सभ्यता के अधिक समीप भी थी। वाल्डीमार राजाओं के समय वहां के पूंजीपति तथा भूमिपति लोग ही राजा के सहायक थे। उन्हीं के पास धन तथा भूमि अधिक थी। वह राजा की सहायता किया करते थे। राजा की सहायता के लिये उनकी एक सभा थी। उस सभा को राड कहा करते थे। हेराल्ड राजाओं के समय चर्च के पादरी भी बड़े शक्तिशाली बने हुये थे। वे धीरे धीरे अपने छोटे छोटे राज्य स्थापित कर रहे थे। शिक्षा का प्रचार भी बढ़ने लगा था। पेरिस के विश्व-विद्यालय में डेन लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिये जाने लगे थे। राष्ट्रीय सम्पत्ति की उन्नति होने के कारण मध्यम श्रेणी के लोग अधिक उन्नति करने लगे थे। उस समय डेनमार्क राज्य का क्षेत्रफल ६० हज़ार वर्ग किलो-मीटर था। उस समय का राज्य वर्तमान डेनमार्क से दुगुना था। उस समय डेनमार्क की जनसंख्या ७ लाख थी। डेनमार्क राज्य की रक्षा के लिये उसके पास १४०० जहाज थे।

वाल्डीमार द्वितीय के बाद उसका पुत्र एरिक प्लोपेनिंक राजा हुआ। परन्तु उसके समय में राज्य की

अवनति होने लगी और डेनमार्क राजों तथा सेल्चतिग के ड्यूकों में गृह युद्ध तेरहवीं और चौदहवीं सदी के आरम्भ काल तक होता रहा। गृह युद्ध के समय कम से कम तीन राजों की हत्या की गई। पादरी और राजा तथा
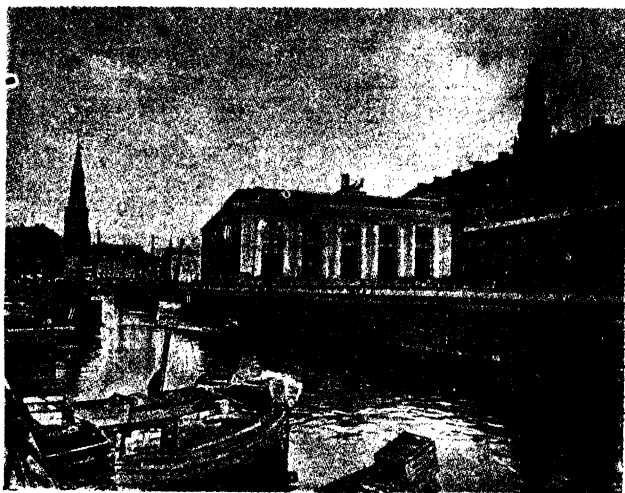
थोर्वाल्डसेन का अजायबघर

राजा और पूंजीपतियों और भूमिपतियों में भी लड़ाई झगड़े होने लगे इन झगड़ों का बड़ा भारी प्रभाव राज्य के ऊपर पड़ा। समस्त राज्य में झगड़ा फैल जाने के कारण राजाओं के अधिकार तथा अत्याचार बढ़ गये।
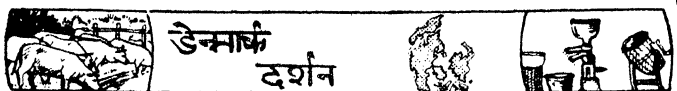
उसी समय देश के भीतर एक ऐसी संस्था का संचार हुआ जो राजा के शासन का विरोध करने लगी। वह १२८२ ई० में एरिक राजा ने नोबिलों (प्रथम श्रेणी के लोग) को हैन्ड फेस्टिनिंग (चार्टर) प्रथम बार स्वीकार किया। इस चार्टर के अनुसार डेनहोफ (राष्ट्रीय परिषद्) की बैठक राजा को बुलानी पड़ी। राष्ट्रीय परिषद् राजा के शासन की एक मुख्य भाग बनाई गई और यह बात तै की गई कि आगे राजाओं को गद्दी न उतारा जावे। क्रिस्टुफर क्रेन को एक दूसरा चार्टर स्वीकार करना पड़ा। जिसके अनुसार प्रथम श्रेणी के लोगों को अधिकार बताये गये। कर में कमी की गई। और राजा को मनमानी काम करने का अधिकार न रह गया। क्रिस्टुफर द्वितीय के मृत्यु के समय डेनमार्क का राज्य लगभग नष्ट हो जाने को ही था। पूर्वी डेनमार्क पर एक बड़े सर्दार का राज्य स्थापित हो गया था। जटलैंड और फ्यूयेन पर दूसरा सर्दार राज्य कर रहा था। सेल्सविग के ड्यूक प्रायः स्वतंत्र ही हो चुके थे। स्कैण्डीनेविया के प्रान्त स्वीडन के अधिकार में चले गये थे।

जब वाल्डीमार चतुर्थ डेनमार्क का राजा हुआ तो

उसने डेनमार्क को फिर से संगठित किया। वाल्डोमार चतुर्थ ने १३४०-७५ ई० तक राज्य किया। उसने शासन चलाने के लिये अपनी आय बढ़ाई। उसने विदेशी शासन को हटाया और प्रजा से भूमि कर लेने लगा। किसानों से जो कर मिलता था वही उसकी मुख्य आय हो गई। उसने अपने जीवन भर भूमि प्राप्त करने का प्रयत्न किया। छोटे सरदारी राज्यों की भूमि छीन कर उसने अपनी भूमि बनाई और पूँजीपतियों तथा बड़े जमींदारों को परास्त किया। उसने अपने राज्य के छोटे छोटे मामलों का निरीक्षण स्वयं किया।

राष्ट्रीय सेना भी प्राचीन ढंग पर तयार की गई। सर्दार लोगों को आज्ञा दी गई कि उनकी भूमि सैनिक सहायता देने के लिये ही उनके पास है इसलिये वह राजा की सहायता के लिये सेना दें। नगरों और कस्बों के लोगों से भी राजा ने कहा कि वह उसकी सहायता सेना तथा जहाज़ से करें। इस प्रकार वाल्डीमार चतुर्थ ने अपने राज्य को फिर से संगठित करके देश के झगड़े का अंत किया और फिर से राज्य स्थापित किया।
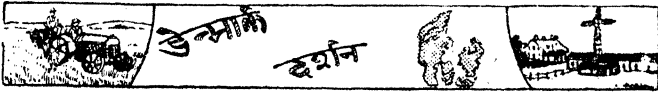
काल्मार का संगठन

१३९७ ई० में स्कैण्डीनेविया के तीनों राज्यों के
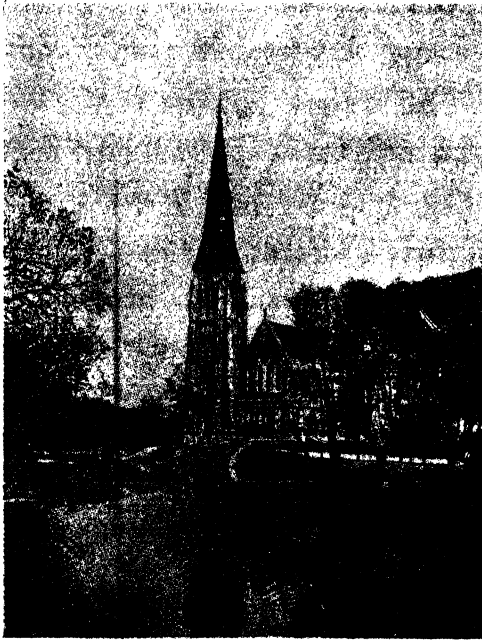
अंग्रेजी गिरजाघर

सभी सर्दार काल्मार में मारगरेट रानी के भतीजे पामेरेनिया के ड्यूक एरिक के राजगद्दी के समय एकत्रित

हुये। इस बड़ी सभा में एक कमेटी बनाई गई जिसने यनियन ऐक्ट तयार किया। मारगरेट ने इस विधान के तयार करते समय यह ध्यान भली भाँति रक्खा कि यूनियन डेनमार्क के शक्तिशाली राजा के अधिकार में रहे और उसके कहने के अनुसार ही काम करे। इसी कारण उसने अपने मेल के लोगों को कमेटी में सम्मिलित किया। एरिक जर्मनी में उत्पन्न हुआ था। उसे डेनमार्क के जर्मन निवासियों को दबाना पड़ा था। उसने सेल्ज़विग पर अधिकार करने के लिये जर्मन सम्राट से कहा और फिर युद्ध किया। परन्तु हेडरस्लेव के सिवा उसे कुछ भी नहीं मिल सका। १४२२ ई० में उसने एक घोषणा निकाली जिस से उसने डेनमार्क के समस्त व्यापार का अधिकार डेनमार्क के व्यापारियों को दे दिया। इससे जर्मन व्यापारी लोग डेनमार्क से चले गये। १४२५ ई० में उसने साउण्ड कर लगाया। जो जहाज साउण्ड होकर जाते थे उन्हें कर देना पड़ता था। १४१६ ई० में उसने कोपेनहेगिन को जीता परन्तु १४२८ ई० में उस पर फिर आक्रमण हुआ। १४३६ ई० में उसे गोटलैण्ड में समाचार मिला कि उसे स्कैण्डी-

नेविया के राजों को प्रिवी कौंसिल ने गद्दी से उतार दिया है और उसके स्थान पर उसके भतीजे बवेरिया के ड्यूक क्रिस्टोफर को राजा बनाया है। १४४६ ई० में एरिक ने गोटलैंड डेनमार्क को दे दिया। १४५६ ई० में पामेरेनिया में एरिक की मृत्यु हुई।

क्रिस्टोफर तृतीय की मृत्यु १४४८ ई० में हुई उस समय काल्मार की यूनियन का अंत हो गया। १४५० ई० में डेनमार्क और नार्वे एक साथ मिल गये और उन्होंने ओल्डेनबर्ग के क्रिश्चियन को अपना राजा बनाया। स्वीडन का राजा वहां का एक प्रभावशाली व्यक्ति कार्ल क्नूटन बनाया गया। इस कारण स्वीडन में गृह युद्ध सा हो गया। आखिर क्रिश्चियन प्रथम (डेनमार्क का राजा) ही स्वीडन का १४५७-६४ ई० तक बना रहा। क्रिश्चियन के बाद हैन्स राजा हुआ। १५२३ ई० में गस्टाव वासा स्वीडन का राजा बना।

१६६० ई० की वैधानिक क्रान्ति

जब डेनमार्क में शान्ति की स्थापना हो गई तो एस्टेट्स असेम्बली कोपेनहेगिन में बुलाई गई। उच्च

श्रेणी वाले तथा सर्दार लोग फिर भी कर देने को तयार न थे। गिरजा के पादरी लोगों ने असेम्बली तथा सरदारों का घोर विरोध किया और उन्हें मजबूर किया कि वह कर देने में हाथ बटावें और राजा से विधान

रोज़ेनबर्ग का दुर्ग

के बदलने के लिये बातचीत करें। आखिरकार फ्रैडरिक तृतीय ने डेनमार्क के लिये एक विधान देने के लिये स्वीकार किया। राजा के मंत्री पेडेर स्चमाचरे ने विधान को बना कर तयार किया। राजा ने इस विधान
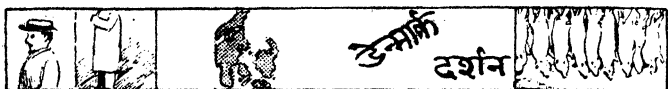
पर १४ नवम्बर १६६५ ई० को अपने हस्ताक्षर किये। इस विधान के अनुसार डेनमार्क का राजा पूर्ण अधिकारी हो गया। राजा ने प्रतिज्ञा किया कि वह डेनमार्क को संगठित रक्खेगा और वहाँ पर ईसाई धर्म का प्रचार जारी रक्खेगा। डेनमार्क में ऐसे नागरिकों को भी अधिकार दिये गये। नगर के लोग अपने प्रतिनिधियों को पार्लियामेन्ट में चुन कर भेज सकते थे। पार्लियामेन्ट में भेजने वाले नगर बरघेर कहलाने थे। इस प्रकार नागरिकों को कार प्राप्त हुआ और वह राज-काज में हाथ बटाने लगे।

१६७५-७६ ई० तक डेनमार्क को स्काने युद्ध और १७०० से १७२० ई० तक स्कैंडीनेविया की बड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी। फ्रैडरिक चतुर्थ ने १६६६-१७३० ई० तक राज्य किया था। उसने १७२१ ई० में सेल्ज़विग के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया। इससे सेल्जविग के ड्यूक तथा डेनमार्क के राजा में शत्रुता हो गई। १७६१ ई० में ड्यूक रूस का राजा बना और उसका नाम पीटर तृतीय हुआ। डेनमार्क और रूस के बीच उस समय युद्ध की सम्भावना उत्पन्न हो गई। इस कारण डेनमार्क को हथियार बन्द होना पड़ा। परन्तु रूस के

राजा को उसकी स्त्री ने मार डाला और वह कैथरिन द्वितीय के नाम से रूस की रानी बनी। १७७३ ई० में रानी की सहायता से डेनमार्क के राजा को हाल्स्टोन और सेल्ज़विग फिर से प्राप्त हो गये।

नैपोलियन की युद्ध

१७६७ ई० तक इंगलैंड अपने कारखानों के कारण एक बड़ा कारखाने वाला प्रदेश बन रहा था। वह विदेश से नाज खाने के लिये मँगाने लग गया था। फ्रान्सीसी क्रान्ति और नैपोलियन युद्ध के समय नाज का मूल्य बहुत बढ़ गया था। जिससे डेनमार्क की आर्थिक उन्नति होने लगी और आधे से अधिक डेनमार्क के किसानों का उनकी भूमि पर अधिकार प्राप्त हो गया। डेनमार्क के व्यापार को भी खूब उन्नति हुई। डेनमार्क ने नैपोलियानिक युद्ध में भाग नहीं लिया। उस समय डेनमार्क का विदेशी मंत्री ए० जी० बर्न्सटोर्फ था। उसने डेनमार्क को युद्ध में भाग नहीं लेने दिया। १७६७ ई० में उसकी मृत्यु हो जाने के पश्चात् इंगलैण्ड और डेनमार्क में झगड़ा हो गया क्योंकि डेनमार्क और दूसरे

तटस्थ राष्ट्रों के साथ व्यापारिक जहाज़ों की रक्षा करता था। इससे इंगलैंड असंतुष्ट हो गया। नेल्सन एक जहाजी बेड़े के साथ डेनमार्क भेजा गया कि वह जाकर उत्तरी राष्ट्रों के संगठन को तोड़ दे। २ अप्रैल १८०१ ई०
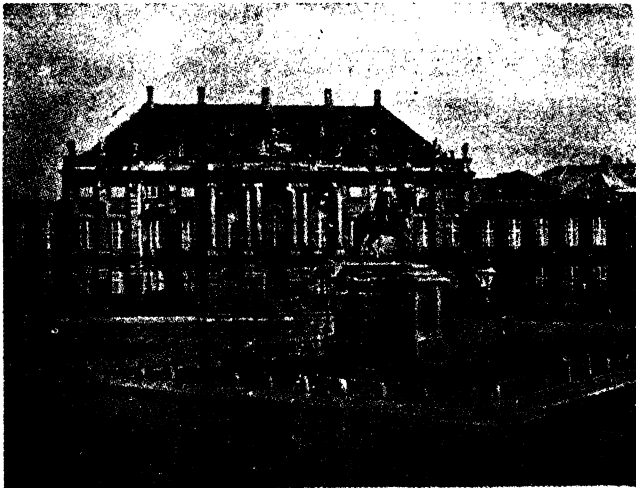
एमेलियनबर्ग महल

को कोपेनहेगेन में युद्ध हुआ। डेनमार्क की हार हुई और उसे इंगलैंड की बात स्वीकार करनी पड़ी। उसने पथरक्षक सेना भेजनी बन्द कर दिया। उसके पश्चात् डेनमार्क के कृषि तथा व्यापार की बड़ी उन्नति हुई।

१८०७ ई० में इंगलैंड ने डेनमार्क से कहा कि वह अपना जहाजी बेड़ा इंगलैण्ड को दे दे। क्योंकि इंगलैण्ड को शंका थी कि कहीं डेनमार्क के जहाजी बेड़े का प्रयोग इंगलैंड के विरुद्ध नैपोलियन द्वारा होवे। फ्रैडरिक चतुर्थ इस बात पर अप्रसन्न हो गया और वह नैपोलियन के साथ राजनैतिक रूप में हो गया। उसके बाद सात साल तक युद्ध चला और डेनमार्क तथा नार्वे का आपसी सम्बन्ध बिलकुल बन्द हो गया। इससे डेनमार्क का व्यापार भी बिलकुल बन्द हो गया। जब इंगलैण्ड की विजय हुई तो १८१४ ई० में डेनमार्क को कील में संधि करनी पड़ी। इस संधि के अनुसार डेनमार्क नार्वे के हाथ से निकल कर स्वीडन के हाथ गया और हेलीगोलैण्ड इंगलैंड के हाथ लगा। डेनमार्क को इनके बदले में लक्सेमबर्ग दिया गया।

१८१४–१९१४ ई० तक

युद्ध के पश्चात् डेनमार्क की अवस्था बड़ी शोचनीय हो गई थी। बैंकों में रुपया न रह गया था। डेन लोग बड़े गरीब हो गये थे। १८१३ ई० में डेनमार्क के नेशनल बैङ्क (राष्ट्रीय बैङ्क) की स्थापना की गई।

जूनविधान फ्रैडरिक की सरकार का विरोध होने के कारण डेनमार्क में लिबरल दल का उत्थान हुआ। नर्म दल वालों ने नये विधान की मांग फ्रैडरिक के सामने पेश किया परन्तु उनकी मांग स्वीकार नहीं की गई। क्रिश्चियन सप्तम ने भी नहीं माना। २० जून १८४८ ई० में क्रिश्चियन सप्तम की मृत्यु हो गई। उसके बाद फरवरी मास में क्रान्ति हुई उस क्रान्ति में नर्म दल वालों की विजय हुई। २१ मार्च को कोपेनहेगिन में एक बड़ा जुलूस निकाला गया। फ्रैडरिक सप्तम ने जुलूस के उत्तर में कहा कि वह ऐसी सरकार की स्थापना करने का स्वयम् इच्छुक है जो प्रजा की चुनी हुई हो। २२ मार्च को ए० वी० मोल्ट का प्रधान मंत्री बनाया गया और उसके नेत्रित्व में एक सरकार बनाई गई। २३ अक्टूबर को राष्ट्रीय परिषद् की बैठक हुई। इस परिषद् ने ५ जून सन् १८४९ ई० को एक विधान डेनमार्क के लिये तयार किया। धारा-सभा का नाम रिग्स्डाग रक्खा गया और उसकी शक्तियों का वर्णन विधान में साफ तौर पर कर दिया गया। प्रतिनिधियों का चुनाव आठ और तीन साल के लिये होता था।

रिग्स्डाग में तीन मुख्य पार्टियां थीं। पहली पार्टी

अपरिवर्तनवादी थी जिसमें ज़मींदार और वह लोग थे जो स्वतंत्र विधान के विरुद्ध थे। दूसरी पार्टी राष्ट्रीय उदार बर्गेर थी जिसने जूनमास का विधान तयार किया था। तीसरा दल किसानों और किसानों के मित्रों का था। अपरिवर्तनवादी लोग जून विधान की शक्तियों को जहां तक सम्भव हो सकता था रोक देना चाहते थे और वह एक ऐसा विधान बनाना चाहते थे जिसमें होल्डस्टीन से ज़मीदार प्रतिनिधि भी सम्मिलित हो सकें। १८५५ ई० में इस प्रकार का विधान बनाया गया परन्तु होल्स्टीन के सदस्यों ने आने से इन्कार कर दिया। १८५७ ई० राष्ट्रीय नर्म दल की फिर विजय हुई और कार क्रिश्चियन हाल प्रधान मंत्री बनाया गया। प्रधान मंत्री ने १८ नवम्बर सन् १८६३ ई० में विधान को तोड़ कर क्रिश्चियन नवम् राजा की सलाह से एक विधान डेनमार्क और सेलजविग के लिये तयार किया। इस विधान के अनुसार सेल्जविग और डेनमार्क का सम्बन्ध घनिष्ट हो गया।

जर्मनी का राजा बिस्मार्क कील हार्बर जर्मनी के लिये चाहता था इसलिये वह युद्ध का इच्छुक था।

१८६४ ई० में प्रशा तथा आस्ट्रिया ने मिल कर होल्स्टीन सेल्ज़विग डेनमार्क से छीन लिया। आस्ट्रो-प्रशन युद्ध के बाद यह प्रान्त प्रशा में मिला दिये गये।

२८ जूलाई १८६६ ई० को डेनमार्क का एक दूसरा विधान बनाया गया। उस समय अपरिवर्तनवादी दल के लोग शक्ति में आ गये थे। उसके बाद राष्ट्रीय परिषद् में दो मुख्य दल हो गये। एक दायाँ पक्ष और दूसरा वाम पक्ष था। दायें पक्ष की विजय १९०१ ई० तक होती रही। १९०१ ई० में ७६ सदस्य वाम पक्ष के चुने गये। तब डेनमार्क के राजा क्रिश्चियन नवम् ने ड्यून्टजेर से कहा कि वह अपनी सरकार स्थापित करे। ड्यून्टजेर की सरकार बनाई गई और जे० सी० क्रिस्टेन्सेन होरप और हेग उसके सदस्य बने। १९१० ई० में वाम पक्ष वालों ने डेनमार्क विधान प्रजातांत्रिक नियमानुसार बदलने के लिये आन्दोलन किया। दायें पक्ष के लोग उसका विरोध करते रहे और उसका कुछ भी निपटारा न हुआ। मई १९१३ ई० में चुनाव हुआ जिसमें रैडिकल तथा समाजवादी सदस्यों की संख्या ६३ हो गई। इन दोनों दलों ने मिल कर सुधार के सरकार पर दबाव डाला।

१९१४-२८ तक

१९१४ ई० में योरुप की जो दशा थी उससे डेनमार्क को बड़ी परेशानी थी। पहली अगस्त को कई एक कानून विशेषाधिकार से बनाये गये और डेनमार्क की ७० हजार सेना को तयार हो जाने के लिये आज्ञा दी गई। डेनमार्क के सभी राज तिक दल डेनमार्क की तटस्थता पर जोर दे रहे थे। ५ अगस्त को जर्मनी ने डेनमार्क से पूछा कि डेनमार्क की सरकार अपने समुद्र में सुरंग लगाने का विचार कर रही है या नहीं। यह प्रश्न बड़ा जटिल था क्योंकि यदि डेनमार्क इन्कार करता तो जर्मनी वहां सुरंग शीघ्र ही लगा देता। डेनमार्क ने आखिरकार सुरंग लगाने का निश्चय किया और सुरंग लगा भी दिया। जर्मनी इस बात से संतुष्ट हो गया और ब्रिटेन ने भी उसकी स्थिति समझ कर उसे सुरंग लगाने की आज्ञा दे दिया। डेनमार्क की सरकार अपनी तटस्थता स्थापित रखने के लिये इँगलैंड और और जर्मनी दोनों का मित्र बना रहा।

५ जून १९१५ ई० को डेनमार्क के राजा ने डेन-मार्क के नये विधान पर हस्ताक्षर किये। इस विधान के
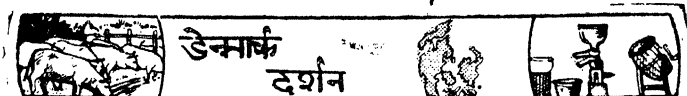
अनुसार (अपर) ऊपर लोअर (नीचे) दोनों परिषदों के सदस्यों के चुनाव में प्रजा को बराबर अधिकार प्रदान किया गया। पुरुष तथा स्त्री दोनों को वोट देने के लिये अधिकार प्रदान कर दिया गया। इस विधान के अनुसार पूँजीपतियों और भूमि पतियों की शक्ति कम हो गई। लैण्डटिंग (अपर परिषद्) के लिये वोटरों की अवस्था ३५ साल और फोकेरिंग (नीचे परिषद्) के लिये २५ से ३० साल की अवस्था नियत की गई। विधान २१ अप्रैल सन् १९१८ ई० को लागू किया गया।

१९१६ ई० में ग्रीष्म ऋतु में डेनमार्क की सरकार ने २,५०,००,००० शि० पर अपने पश्चिमी द्वीप समूह के द्वीपों को संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हाथ बेच दिया। इस पर राज्य के अन्दर बड़ा झगड़ा खड़ा हो गया आखिरकार १४ दिसम्बर १९१६ ई० को जनमत लिया गया तो २,८३,६७० वोट बिक्री के पक्ष में और १,५८,१५७ वोट विपक्ष में गिरे। आइसलैण्ड की स्वतंत्रता का भी उसी समय प्रश्न छिड़ा, आइसलैण्ड डेनमार्क से स्वतंत्र होना चाहता था। नवम्बर १९१८ ई० में यूनियन विधान पास किया गया जिसके अनुसार

आइसलैण्ड की स्वतंत्रता को डेनमार्क ने स्वीकार किया और डेनमार्क का राजा डेनमार्क तथा आइसलैण्ड

फ्रीगेट

दोनों देशों का संयुक्त राजा बना रहा। आइसलैंड की विदेशी बागडोर डेनमार्क के हाथ में रह गई। यूनियन विधान का समय १९४० तक है।
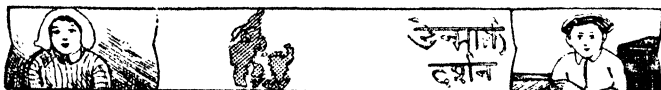
१६१७ ई० में जब गोताखोर जहाज़ों का युद्ध आरम्भ हुआ और ब्लाकेड के नियम अधिक कड़े किये गये तो डेन्मार्क के आर्थिक जीवन में बड़ी बड़ी कठिनाइयां उत्पन्न हो गईं। बेकारी दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी, चीज़ों का मूल्य अधिक बढ़ गया और देश के भीतर लोगों की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ने लगी।

मित्र राष्ट्रों की विजय होने के कारण डेन्मार्क को उसका सेल्जविग का भाग मिल गया। ८ मार्च १६२० ई० को डेन्मार्क राष्ट्र संघ में सम्मिलित हो गया। रूस के साथ व्यापारिक संधि हो गई। ६ जुलाई १६२४ ई० को संधि के अनुसार नार्वे की प्रजा और कम्पनियों को पूर्वी ग्रीनलैंड में २० साल तक के लिये कुछ अधिकार दिये गये। युद्ध के पश्चात् डेन्मार्क की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हुआ परन्तु १६२६ ई० के बाद से आर्थिक संकट फिर आरम्भ हुआ।

गत मार्च १६४० ई० में जर्मनी ने डेन्मार्क पर आक्रमण किया और उसे विजय कर लिया। अब डेन्मार्क जर्मन अधिकार में है।

स्थिति

स्थिति, क्षेत्रफल और बनावट

डेन्मार्क योरुप का एक छोटा सा राज्य है। इसमें जटलैएड प्रायद्वीप का कुछ भाग तथा वह द्वीपसमूह सम्मिलित हैं जो उत्तरी सागर को बाल्टिक सागर से अलग करते हैं। जटलैएड प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग (होल्स्टीन और सेल्जविग) जर्मनी के अधिकार में हैं। डेनमार्क का उत्तरी भाग डेन्मार्क के प्रधान भाग से सँकरे समुद्री भाग द्वारा अलग है। इस पतले उथले भाग को लिम्फजोर्ड कहते हैं। यह उत्तरी सागर को कैटेगाट से मिलाता है। जटलैंड के उत्तर और उत्तर-पश्चिम की ओर स्कैगरक है। कैटेगाट, बाल्टिक, स्वीडन और डेन्मार्क के आधार के मध्य डेन्मार्क के द्वीप हैं।

डेन्मार्क राज्य का क्षेत्रफल १६,५६८ वर्गमील है। जटलैएड का क्षेत्रफल ११,४०८ वर्गमील तथा बाल्टिक सागर के द्वीपों का क्षेत्रफल ५,१६१ वर्गमील है। बाल्टिक सागर में फ्यूरेन और ज़ीलैंड के दो बड़े द्वीप हैं। छोटे द्वीप इनके दक्षिण में हैं। बोर्नहोल्म का द्वीप
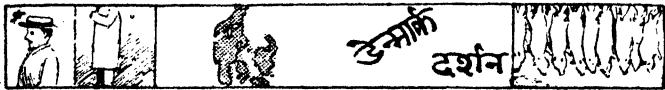
इनके पूर्व कुछ दूरी पर स्थित है। यह स्वीडन का एक भाग मालूम होता है और स्कैंडीनेविया का सबसे दक्षिणी भाग है। डेनमार्क की भूमि पथरीली है। क्रेटासियस काल में डेनमार्क का कुछ भाग समुद्र के ऊपर निकला

लेंजेलिनी

था और उसके बाद धीरे धीरे डेनमार्क के भाग समुद्र के ऊपर निकले। हिम काल के अन्त होने पर जब ऐंसीलस झील बनी तो डेनमार्क का पूरा भाग दिखलाई पड़ा।

प्राकृतिक दशा

डेनमार्क देश एक निचला देश है। दक्षिणी-पूर्वी जेटलैंड में एज़रे बावनेहोज स्थान सब से ऊँचा है। यह समुद्र के धरातल से लगभग साढ़े तीन हज़ार इंच ऊँचा है। डेनमार्क में और बहुत सी पहाड़ियाँ हैं जो दो हज़ार से ढाई हज़ार इंच तक ऊँची हैं। ज़ीलैण्ड फ्यूएन और पूर्वी जेटलैण्ड की भूमि उपजाऊ मिट्टी की बनी है। यहाँ पर डेनमार्क के सुन्दर खेत, चरागाह और जंगल हैं। पश्चिम की ओर बड़े मैदान हैं। यह बलुही भूमि का बना हुआ है। इस मैदान में कहीं कहीं बरफ की तहें पाई जाती हैं। जेटलैंड के पश्चिमी तट पर बालू के भीटों (ढेर) का सिलसिला है। इनसे पिछली सदी में बड़ी हानि हुई थी परन्तु अब इनका प्रबन्ध कर दिया गया है और किसी भाँति की हानि खेतों अथवा बस्तियों को नहीं होती है।

जटलैण्ड

इसका तट जहाज चलाने के लिये खतरनाक है। इस द्वीप में कोपेनहेगेन, फ्रेडरिक्सबर्ग और जेनटोफ्टे स्थित हैं। इन नगरों की जनसंख्या समस्त डेनमार्क की २१ प्रतिशत है। पश्चिमी तट पर एज्सबर्ग का बन्दरगाह है। यह स्थान मछली मारने वाले जहाजों का केन्द्र है। यहाँ से फ्रांस और इंगलैंड को सवारी जहाज़ रोज़ाना जाया करते हैं। हैंस्टाल्स और हैंस्टहाल्म के बन्दरगाह भी बन गये हैं। वार्डे, ओमे, स्वजेर्ने, स्टारे और कारूर की मन्द गति वाली छोटी नदियाँ नम वाली भूमि में होकर बहती हैं। लिम्फजोर्ड के दोनों ओर दलदल है जो विल्डमोसे के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ की सब से बड़ी नदी गुडना है। यह ८० मील लम्बी है और पूर्वी तट के समीप से निकलती है और सिल्केबोरे झीलों का पानी लेती हुई चक्करदार मार्ग बनाती हुई रैंडर्स फजोर्ड में गिरती है। स्लेसविग के समीप छोटी पेटी में अल्सेन का द्वीप है। फ्यूएन का मुख्य द्वीप छोटी पेटी द्वारा प्रायद्वीप से अलग है। इसकी चौड़ाई आधे मील से १०

मील तक है। इसका क्षेत्रफल २६८६ वर्गमील है। फ्यून का द्वीप डेनमार्क से मिला हुआ है। इसमें उपजाऊ निचले प्रदेश हैं जिनके बीच में कही कहीं बन तथा पर्वतीय पहाड़ियाँ हैं। दक्षिण की ओर तासिंजे अवेरनाको और ड्रेइयो के द्वीप स्थित हैं। यह द्वीपसमूह एरो (२६ मील) और लेंजलैंड (३२ मील) लम्बे द्वीपों से घिरा है। लेंजलैंड में तेरहवीं सदी का बना हुआ ट्रेंकजेर नामक दुर्ग है।
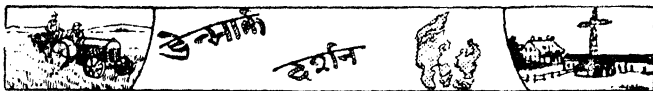
ज़ीलैण्ड

यह डेनमार्क का सब से बड़ा द्वीप है। यह फ़्यून द्वीप के पूर्व स्थित है। यह बड़ी पेटी द्वारा फ्यून से अलग है। बड़ी पेटी के सब से सँकरे भाग की चौड़ाई ११ मील है। इस द्वीप की लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ८२ मील और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम को ६८ मील है। इस द्वीप का क्षेत्रफल २,६३६ वर्गमील है। इसके उत्तर की ओर कैटेगट, पूर्व की ओर साउण्ड और दक्षिण की ओर जलसंयोजक तथा मोयन, फल्स्टेर और लालैण्ड के द्वीप हैं। इस द्वीप के उत्तर का ईसे फ्जोर्ड सब से अधिक प्रसिद्ध है। इस फ्जोर्ड की पूर्वी शाखा रोसकिल्डे और पश्चिमी शाखा लामे फ्जोर्ड है। यह फ्जोर्ड २५ मील भीतर की ओर घुसा हुआ है। इस द्वीप में छोटी हिमानी झीलें हैं। उत्तर-पूर्व की ओर आरे एस्टरोम की बड़ी झीलें हैं।

जलवायु

जलवायु तथा वनस्पति

डेनमार्क की जलवायु और दूसरे उसी कटिबन्ध में बसे देशों से कम सर्द है। इसका कोई भी भीतरी भाग समुद्र से ४० मील से अधिक दूर नहीं है। डेनमार्क का सब से कम ताप ४५'२° अंश है। जुलाई का ताप ६१° और जनवरी का ३२° अंश है। दिसम्बर से मार्च तक प्रत्येक मास में २० दिन कुहिरा पड़ता है। पूर्वी तट कुछ समय तक बरफ से जमा रहता है। कभी कभी सागण्ड और दीर्घ पेटी का बरफ के कारण पार करना कठिन हो जाता है। जाड़े के दिनों में बर्फीले तूफान आया करते हैं। साल भर में २४ इंच बर्षा होती है। जुलाई से नवम्बर तक बर्षा होती है। सितम्बर के महीने में सब से अधिक बर्षा होती है। मध्य जेटलैंड में सितम्बर में बहुत बर्षा होती है। पूर्वी डेनमार्क में पश्चिमी डेनमार्क से अधिक वर्षा होती है। जाड़े के दिनों में पश्चिमी भाग में अधिक और पूर्वी भाग में कम बर्षा होती है। पश्चिमी तट पर एक प्रकार का नमकीन कुहरा पड़ता है जो पौदों को बढ़ने नहीं देता

है। इसका प्रभाव भीतरी भाग पर १५ से ३० मील तक पड़ता है। डेनमार्क एक मुख्य कृषक तथा चरागाह वाला देश है।

डेनमार्क में कई प्रकार के पौदे पाये जाते हैं। द्वीपों और पश्चिमी तट पर उत्तरी योरुप के मामूली पौदे पाये जाते हैं। अटलांटिक सागरी बलुही पहाड़ियों और मैदानी बनों में मुख्य भांति के पौदे उगते हैं। डेनमार्क में चीर के बन बहुत हैं परन्तु शुण्डाकार वृक्षों के बन लगाने का भी प्रयत्न किया गया है। यह बन अधिकतर जटलैंड में लगाये गये हैं। बलूत और ऐश के वृक्ष अब डेनमार्क में कम पाये जाते हैं परन्तु सत्रहवीं सदी में इन वृक्षों की उपज बहुत होती थी। अभी हाल ही में बड़े बड़े बलूत के बन लगाये गये हैं। प्राचीन समय में सनोवर के बन बहुत थे उनके चिन्ह अब भी पाये जाते हैं। डेनमार्क में डेनमार्क की ही लकड़ी का प्रयोग किया जाता है।

डेनमार्क का विधान

५ जून सन् १९१५ ई० के क़ानून में डेनमार्क का विधान सम्पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है। इस कानून में १९२० ई० में कुछ परिवर्तन किये गये जब कि वर्साई की संधि के अनुसार उसे उत्तरी सेल्जविग प्राप्त हुआ। १९२० ई० का परिवर्तन डेनमार्क के १८४९ ई० के विधान के अनुसार है। डेनमार्क के राजा तथा पार्लियामेन्ट के हाथ में डेनमार्क के क़ानून बनाने की शक्ति है। शासन की बागडोर राजा अथवा राज्य की सब से बड़ी सभा के हाथ में है। न्याय कचेहरियों द्वारा होता है। पार्लियामेन्ट दो सभाओं से मिल कर बनी है। बड़ी सभा को लैंडटिंग और छोटी को फोकेटिंग कहते हैं। डेनमार्क के प्रत्येक २५ साल की अवस्था वाले मनुष्य को वोट देने का अधिकार प्राप्त है। वोटर के रहने का नियत स्थान होना आवश्यक है। फोकेटिंग के सदस्य ४ साल के लिये चुने जाते हैं। उनकी संख्या वर्तमान समय में १४९ है। फोकेटिंग के सदस्यों को फोकेटिंग के वोटर चुनते हैं। फोकेटिंग के वोटरों की अवस्था ३५ साल की होनी चाहिये। वोटर लोग ५६

सदस्यों का चुनाव करते हैं। १७ सदस्यों का चुनाव लैंडटिंग द्वारा होता है। पार्लियामेन्ट को रिग्स्डाग कहते हैं। रिग्स्डाक की बैठक प्रत्येक साल अक्तूबर महीने के प्रथम मंगलवार को अवश्य होती है। राज्य के अन्दर प्रीवी कौंसिल सब से बड़ी शासन करने वाली सभा है। यह सभा बिल तथा सरकारी आज्ञा तथा घोषणाएं तयार करती है। शासन के ध्यान से डेनमार्क २२ अम्तेर (काउन्टीज़) में बँटा है। प्रत्येक अम्तेर का मालिक गवर्नर होता है। स्थानीय प्रबन्ध करने के लिये म्यूनिस्पलटियाँ हैं।

जनसंख्या

द्वीपों तथा जटलैंड के उपजाऊ स्थानों की घनी आबादी है। जिन प्रान्तों में जंगल नहीं हैं वहां पर
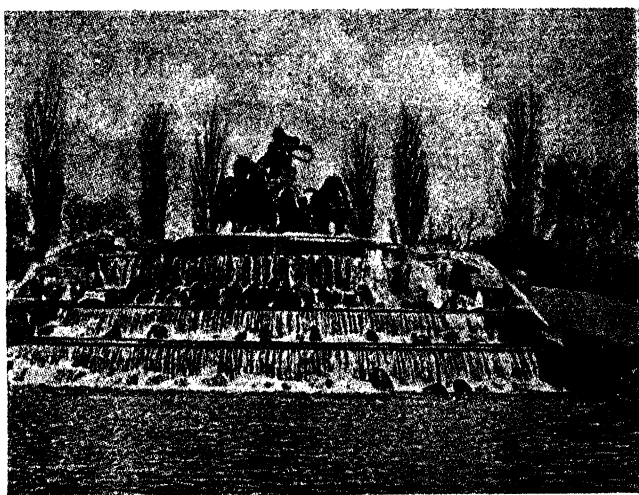
जेफिओन का प्रप त

किसान लोग रहा करते हैं और उन्हीं स्थानों की जनसंख्या भी अधिक है। पहले लोग गाँवों में रहते थे इसलिये इकट्ठा स्थानों पर खेती हुआ करती थी। परन्तु अब डेनमार्क के अधिकांश गाँवों में कारखाने खोल दिये
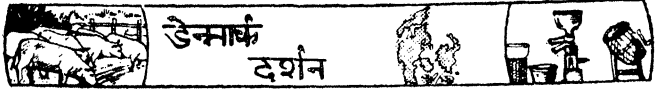
गये हैं। इस कारण अब गाँवों की संख्या कम हो गई हैं इसी कारण खेत भी अकेले दूर दूर पाये जाते हैं।

टिवोली में लुम्बायज का स्मारक (स्टेचू)

डेनमार्क की समस्त जनसंख्या लगभग ४० लाख है। वहां एक वर्गमील में लगभग २०७ मनुष्य निवास करते हैं। द्वीपों में २४८ मनुष्य प्रति वर्गमील में निवास करते हैं।

सबसे बड़ा नगर कोपेनहेगेन है। वहां की जनसंख्या

लगभग ८ लाख है। दूसरा बड़ा नगर आरहूस का है जिसकी जनसंख्या लगभग ८० लाख है। ओडेन्से नगर की जनसंख्या भी ५० हज़ार से अधिक है। प्रान्तीय नगरों की जनसंख्या २० हज़ार से अधिक है। नागरिक जनसंख्या १६१४ ई० के युद्ध के पश्चात् बहुत बढ़ी है। नगरों की जनसंख्या समस्त डेनमार्क की जनसंख्या की लगभग आधी है।
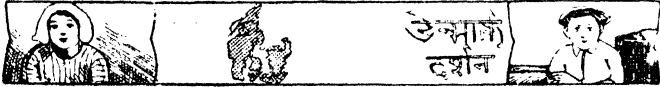
व्यवसाय

डेनमार्क का मुख्य व्यवसाय खेती है। बार्नहाल्म में कोयला पाया जाता है परन्तु डेनमार्क में कहीं भी कोयला अथवा कोई भी दूसरी धातु लाभ के साथ नहीं
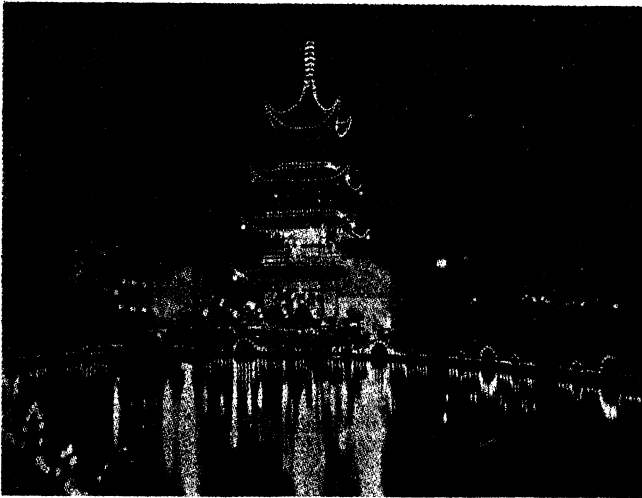
चाय का शामियान बिजली से प्रकाशित

निकाली जा सकती है। जटलैंड में गैस के कारखानों के लिये लोहे का प्रयोग किया जाता है। नई खरिया मिट्टी का प्रयोग चूने के जलाने के लिये किया जाता है और पत्थर का प्रयोग मकान बनाने के लिये किया जाता है।

खरिया मिट्टी से सिमेन्ट बनाने का काम लिया जाता है। मिट्टी से खपड़े बनाये जाते हैं। बोर्नहाल्म से पत्थर मकान बनाने के लिये निकाला जाता है। बोर्नहाल्म में एक प्रकार की चिकनी मिट्टी पाई जाती है जिससे

स्वर्ण जटित गाड़ी

चीनी मिट्टी तथा कागज़ तयार किया जाता है। डेनमार्क में मछली मारने का बड़ा रोज़गार होता है। इसी रोज़गार के कारण कोपेनहेगन नगर की उन्नति हुई है। मोटर बोटों तथा मछली मारने के उन्नतिशील
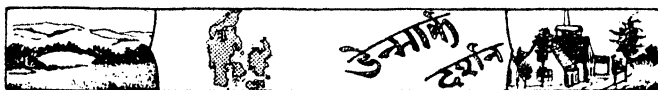
औज़ारों के प्रयोग से मछली मारने का व्यवसाय और भी अधिक उन्नति कर गया है। तटीय स्थानों में काड, प्लेसे ईल, हेरिंग और मैकेरेल मछलियां तथा गहरे समुद्रों में काड प्लेसे और हैडाक मछलियां पाई जाती
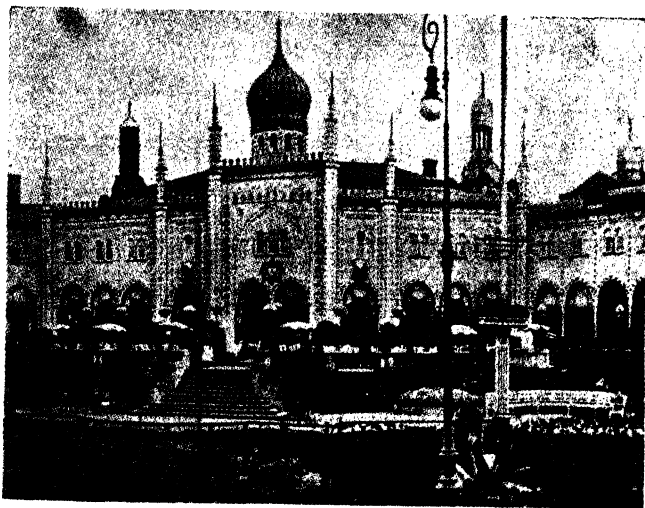
बाज़ार

हैं। डेनमार्क में जितनी मछली पकड़ी जाती है उसका आधे से अधिक भाग निर्यात कर दिया जाता है। डेनमार्क में सहायक बाज़ारों और रेलों, सड़कों का अच्छा प्रबन्ध होने से व्यापार में सफलता है।

धर्म

डेनमार्क में लूथर चर्च महान माना जाता है। यह १५३६ ई० में स्थापित किया गया था। यहां का राजा लूथर के चर्च का अनुयायी होता है। डेनमार्क में धर्म की स्वतंत्रता है। वहां पर कई प्रकार के ईसाई मत के मानने वाले रहते हैं परन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। वहाँ पर सात लाट पादरी हैं परन्तु उनमें ज़ीलैंड का बड़ा लाट पादरी सब से बड़ा माना जाता है। वह कोपेनहेगेन में रहता है। उसका मठ रोसकिल्डे में है। १६२१ ई० की जनगणना के अनुसार डेनमार्क में ३२,२१,८४३ प्रोटेस्टेंट, २२,१३७ रोमन कैथलिक, ५३५ यूनानी कैथलिक, ५,६४७ यहूदी और १७,३४६ दूसरे धर्मों के मानने वाले हैं।
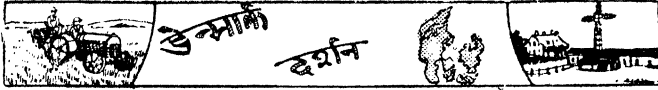
शिक्षा

डेन्मार्क में १६१४ से ७ साल से १४ वर्ष तक के बच्चों के लिये अनिवार्य शिक्षा प्रचलित है। १६२६ ई० में डेन्मार्क में ३४ सरकारी स्कूल, ३८५२ स्थानीय

टाउन हाल

स्कूल तथा ६०७ निजी पाठशाले थे। इन पाठशालों में पढ़ाने के लिये नार्मल स्कूल में अध्यापक तयार किये जाते हैं। अध्यापकों को सिखाने के लिये २० नार्मल

स्कूल हैं। ५ साल तक बच्चों को प्रायमरी शिक्षा दी जाती है। उसके बाद ५ साल तक वह मिडिल कक्षा की शिक्षा प्राप्त करते हैं फिर लड़के हाई स्कूल में जाते हैं। वहाँ पर हाई स्कूलों की संख्या ३०० है। हाई स्कूल में प्राचीन तथा आधुनिक भाषा की शिक्षा अलग अलग दी जाती है। विद्यार्थियों को किसी भी एक भाषा को सीखने की स्वतंत्रता प्राप्त है। साइन्स (विज्ञान शास्त्र) की शिक्षा का अंत राज्य परीक्षा के पश्चात् होता है। प्रौढ़ मनुष्यों की शिक्षा के लिये ६० प्राइवेट हाई स्कूल हैं जिन्हें सरकार की ओर से सहायता मिलती है। इसके सिवा २३ कृषक पाठशाले, २५० कारीगरी और कला सिखाने के पाठशाले हैं। कोपेनहेगन की राज्य-विश्व-विद्यालय की स्थापना १४७६ ई० में हुई थी। वहां पर लगभग ५ हज़ार विद्यार्थी हैं। सब कहीं स्त्रियां मनुष्यों के साथ शिक्षा प्राप्त करतीं तथा काम करती हैं।

खेती
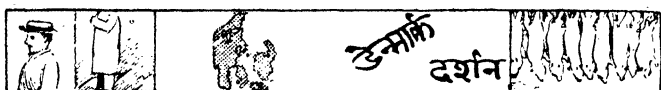
वर्साई की संधि से डेनमार्क की भूमि में स्लेज़विग की भूमि मिला दी गई जिससे ३,२८० किलोमीटर खेती वाली भूमि और १४,३६४ खेत बढ़ गये। अब किसानों की संख्या अधिक हो गई है। १६२० ई० में किसानों की संख्या १,७२,००० थी और १६२० ई० में उनकी संख्या २,०५,६२६ हो गई थी।

१८६६ तथा १६०६ ई० के भूमि कानून बनने से लगभग ११,००० नये खेत बनाये गये। १६२७ ई० में खेतों की संख्या २,१४,००० थी। औसत दर्जे के खेत का क्षेत्रफल ४५ एकड़ है। खेतों की अधिकता होने से खेतों के मालिक भी बनने लगे। १६१६ ई० के नियम के अनुसार बड़े तथा मध्यम श्रेणी के खेतों पर से ठीकेदारी का नियम हटा दिया गया। छोटे किसानों तथा खेतों में अब भी ठीकेदारी का नियम प्रचलित है। १६१६ ई० में ५,७०० छोटे किसानों के खेत थे जो ठीके अथवा लगान पर थे।

कृषि विभाग की तालिका

छोटाई बड़ाई के हिसाब से खेतों का विभाग	खेतों की संख्या	कुल जोड़	कुल जड़ का प्रति शत	प्रति शत में कृषि का विभाग			
				बिना लगान के खेत	ठीके वाले खेत	लगान वाले खेत	दूसरे प्रकार के खेत
एकड़		एकड़					
सवा एकड़ से ७½ एकड़	४३,८६१	२,३१,४६५	२'४	८५'७	९'९	१'७	२'७
७½ से २५	६५,३५४	११,२४,०६५	११'८	९३'९	२'६	१'४	२'१
२५ से ३७½	२५,४९४	९,१३,५५५	९'६	९५'४	१ २	१'८	१'६
३७½ से ७५	४३,३६४	२७,३२,२००	२८'६	९५ २	१'१	२ २	१'५
७५ से १५०	२२ ५५२	२६,५७,८६०	२७'८	९३'६	१'४	३'४	१'६
१५० ,, ३००	४,०३९	९,६८,०४०	१०'१	९१'२	०'६	६'६	१'[illegible]
३०० ,, ६००	९१६	४,६३,०६५	४'९	७९'२	०'५	१'८८	१'[illegible]
६०० से ऊपर	४१९	४,५४,७३०	४'८	६३'५	०'५	३२'२	३'[illegible]
कुल जोड़	२,०५,९२९	९५,४४,९८०	१००'०	९२'४	३ ५	२'१	२'[illegible]

उपरोक्त तालिका से पता लगेगा कि २५ से साढ़े सैंतीस एकड़ तक खेत वाले किसानों की संख्या अधिक है। इस प्रकार के किसान कुल कृषक भूमि के ६६ प्रतिशत पर अधिकार जमाये हुये हैं। २५ एकड़ से नीचे वाले खेतों की संख्या कुल १४ प्रतिशत है। १५० एकड़ से ऊपर वाले खेतों की संख्या कुल का २० प्रतिशत है।

उपज

उपज तथा व्यापार

गत महायुद्ध और उसके बाद उपज तथा व्यापार पर उसका बहुत प्रभाव पड़ा। गत महायुद्ध के पहले ३० साल तक डेन्मार्क की खेती में पशुओं की वृद्धि बहुत हुई थी। डेन्मार्क उस समय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर खेती से अधिक निर्भर करता था। १९१३ ई० में डेन्मार्क से ५५,००,००,००० क्रोनेर (डेन्मार्क का एक सिक्का) की खेती की उपज बाहर भेजी गई और १८,१०,००,००० क्रोनेर का नाज बाहर से मँगाया गया। गत महायुद्ध ने इस व्यापार को बन्द कर दिया था।

नीचे डेन्मार्क के पशुओं की तालिका दी गई है।

फार्म के पशुओं की संख्या

साल	घोड़े	पशु	गाय	सुअर	भेड़	चिड़ियाँ
१९०९	५३५	२,२५४	१,२८४	१,४६८	७२७	११,८१६
१९१४	५६७	२,४६३	१,३१०	२,४९७	५१५	१५,१४०
१९१८	५४५	२,१२४	१,०२४	६२१	४७०	८,८८४
१९१९	५५८	२,१८८	१,०४२	७१६	५०९	१२,१३४
१९२०	६०२	२,५०४	१,१९६	१,११६	५४०	१४,३९५
१९२२	५७६	२,५२५	१,३११	१,८९९	४४२	१९,१८४
१९२४	५४८	२,६६७	१,३६९	२,८६८	३०२	२०,२८४
१९२५	५३६	७२,७५८	१,३९१	२,५१७	२६१	२०,०९३
१९२६	५४८	७२,८३८	१,४८०	३,१२२	२३३	१८,५२४
१९२७	५२४	७२,९१२	१,५१३	३,७२९		

पशु व पशुओं से उत्पन्न की हुई वस्तुओं की तालिका

वर्ष	संख्या हज़ारों में			१० लाख किलो ग्रामों में					
	घोड़े	पशु	सुअर	पनीर	जमा दूध	बैकन	गाय का मांस	मक्खन	ऊन
१९१०–१३	२६.८	१४३	...	०.३	२.५	११६.२	१७ ६	८८.५	२५.२
१९१४	९५.७	१८८.९	...	०.५	२.७	१४७.१	१७.४	९५.३	२७.५
१९१६	१६.१	३०५.४	...	४.५	३.३	१०४.७	१८.२	१६.१	२८.९
१९१८	२९.२	११३.८	...	३.२	१.४	२.७	१३.९	२९.२	१९.७
१९१९	१.४	३२.३	०.४	२.६	१.७	०.९	८.३	१.४	२०.४
१९२०	२४.१	६१.२	५३.६	९.७	६.३	४२.४	१७.६	२४.१	३२.८
१९२२	१९.७	८२.५	१०.०	८ ९	२३.४	१११.४	२०.५	१९.७	४४ २
१९२४	१२ ६	१७२ .९	२०५.४	८.८	३४.२	१९७.२	३.८	१२.६	५०.०
१९२६	२.६	१५८.३	१८.१	७.०	२५.८	१९०.२	१६.२	२.६	५०.०

१ किलोग्राम = २ १/५ पौंड

१९१७ ई० के पश्चात् व्यापार में जो कमी हुई उसका मुख्य कारण यह था कि १९१७-१९१८ ई० में डेन्मार्क की उपज बहुत खराब हुई थी। १९१९ ई० में डेन्मार्क से केवल १,००,००० किलोग्राम मांस निर्यात किया गया था। १९२३ और २४ ई० में सुअर, भेड़ के बच्चों और अंडों का व्यापार खूब बढ़ा था और पशु तथा गाय के मांस का निर्यात १९१४ ई० की लड़ाई के पहले के समान ही रहा। घोड़ों के निर्यात में कमी रही।

गत महायुद्ध के समय सुअर, मक्खन और जमाये हुए दूध का निर्यात बड़ी उन्नति पर रहा। मलाई और ताजे दूध के निर्यात में कमी रही। १९१४-१९ ई० में जानवरों की पैदावार कम होने के कारण डेनमार्क में पौदों की उपज कम हुई और साथ ही साथ जानवरों को भोजन सामग्री में विदेश से कम मँगाई गई।

१९२६ ई० में डेनमार्क की समस्त उपज ९३,००,००० क्राप यूनिट (लगभग २ खरब ४ अरब ६० करोड़ पौंड) थी। गत महायुद्ध काल में नाज और कपास की उपज तो कम हुई परन्तु आलू, जड़ वाली वस्तुओं और शकर की अच्छी उपज हुई। इस अच्छी उपज के कारण इन वस्तुओं की खेती भी युद्ध के पश्चात् अधिक की गई।

सेना

डेन्मार्क की सेना को अपने प्राचीन तीस साला युद्ध की विजय पर बड़ा घमंड है। नैपोलियानिक युद्ध और सेल्ज़विग और होल्स्टीन के युद्ध में डेन्मार्क की दशा बड़ी शोचनीय हो गई थी। योरुप के १८७० और १९१४-१८ के युद्ध में डेन्मार्क तटस्थ बना रहा। जर्मनी की पराजय के कारण डेन्मार्क की सीमा १९१९ के पश्चात् और बढ़ गई।

१९२२ ई० के डेन्मार्क के सैनिक नियम के अनुसार १७ साल के युवक सेना में भरती किये जाने लगे। भरती हो जाने पर उन्हें ५ मास की शिक्षा दी जाती है। उसके पश्चात् १९ और २५ साल की अवस्था के बीच ४ बार सालाना शिक्षा प्रदान की जाती है। घोड़सवार और तोपखाने के लोगों को अधिक समय तक शिक्षा दी जाती है। स्वयंसेवकों को साल में २ मास शिक्षा दी जाती है। ८ साल तक प्रथम लाइन में और फिर ८ साल तक स्थायी सेना में सैनिकों को रहना पड़ता है। इन १६ सालों में सैनिक डेन्मार्क के बाहर बिना आज्ञा

नहीं जा सकते हैं। उनको अपने रहने के स्थान तथा समय की सूचना सैनिक विभाग को देनी पड़ती है। प्रथम लाइन में १०,६०० सैनिक रहते हैं जिसमें से ७०५० सैनिक पूरी शिक्षा प्राप्त करते हैं और १५०० सैनिक लैंडस्टार्म की शिक्षा पाते हैं। सेना के तीन भाग होते हैं जिनमें तीन या चार जत्थे होते हैं। तोप चलाने वालों और तटीय तोपखाने का जत्था अलग होता है। एक जत्था इञ्जीनियर और मज़दूर सैनिकों का होता है।

डेन्मार्क की सेना का सब से बड़ा अफसर वहाँ का राजा होता है। वहाँ पर युद्ध मन्त्री मंडल होता है जिसके चार विभाग होते हैं। सैनिक जत्थे मेजर-जनरल की अध्यक्षता में रहते हैं और देश में चारों ओर बँटे रहते हैं। बोर्नहाल्म की सेना अलग कर्नल की अध्यक्षता में रहती है।

डनमार्क के हवाई विभाग में ६५ लड़ाके वायुयान हैं। यह विभाग जनरल स्टाफ के आधीन है। इस विभाग में हवाई शिक्षा प्रदान करने के लिये एक स्कूल है जहाँ पर स्वयंसेवकों तथा भरती होने वाले सैनिकों को शिक्षा प्रदान की जाती है।

जलसेना

डेन्मार्क की रक्षा के लिये ५ समुद्री लड़ाके जहाज़ और मानीटर जहाज़ हैं। मानीटर जहाज़ों में सब से बड़ा नील्स ज्वेल है। यह १९१८ ई० में बन कर तयार हुआ था। इसका वज़न ४२०० टन है। यह ५.९ इंच को १० तोपें और दो १७.७ इंच के टारपिडो ट्यूब्स २ बहुत छोटे लड़ाकू जहाज़, २३ टारपीडो बोट, १४ सबमरीन (पनडुब्बे जहाज़) और २० दूसरे तरह के छोटे जहाज़ ले जा सकता है। जलसेना और स्थल सेना दोनों का प्रबन्ध युद्ध मन्त्री मंडल के हाथ में है।

आने जाने के साधन

डेन्मार्क से दूसरे देशों को आने जाने का मार्ग समुद्र द्वारा है। इंगलैंड, फ्रांस, बेल्जियम, हालैण्ड को एस्बजर्ग बन्दरगाह से रोजाना जहाज़ आया जाया करते
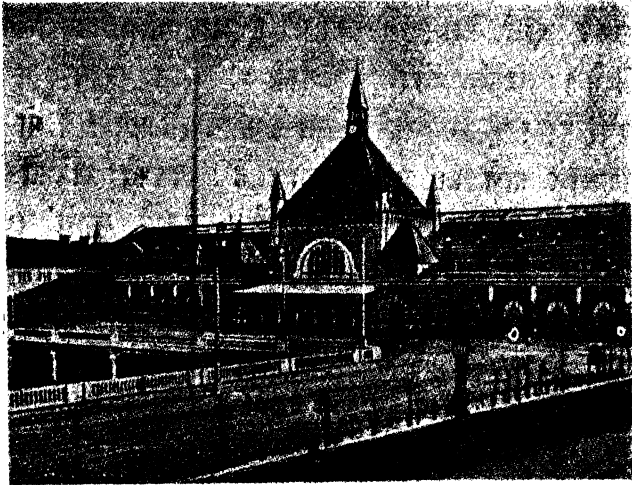
सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन

हैं। जर्मनी को नाव द्वारा तथा स्टीमरों द्वारा यात्रा होती है। गेडसेर से वार्नेमुण्डे को और कोपेनहेगेन से माल्मो को तथा एल्सीनोरे से हेल्सिंगबर्ग को रेलगाड़ियां

द्वारा यात्रा की जा सकती है। हेल्सिंगबर्ग से रोज़ाना सवारी गाड़ियां तथा स्टीमर आते जाते रहते हैं। स्लेसविग से हैम्बर्ग को पैटबर्ग होकर जो रेलवे लाइन जाती है वह डेन्मार्क की सबसे बड़ी रेलवे लाइन है। डेन्मार्क के पास ५ हज़ार किलोमीटर रेलवे लाइन है। इसकी आधी डेन्मार्क राज्य की है और आधी कम्पनियों की है। जटलैंड और दूसरे द्वीपों के बीच स्टीमरों तथा नावों द्वारा आना जाना होता है। निचले प्रदेश में मोटर ही आने जाने का मुख्य साधन है। पक्की सड़कों के बनाने में बड़ी उन्नति हो चुकी है। हवाई मार्गों तथा साधनों की भी उन्नति की जा रही है। कोपेनहेगेन अन्तर्राष्ट्रीय हवाई लड़ाई का केन्द्र बनाया जा रहा है।

डेन्मार्क का डहलगार्ड

डहलगार्ड का पूरा नाम बर्टेल डहलगार्ड है। वह डेन्मार्क के एक टापू में रहता है। यह टापू डेन्मार्क के सब से बड़े भाग (अर्थात् प्रायद्वीप) से कुछ ही दूर है। अगर चाहो तो तुम प्रायद्वीप से रेलगाड़ी पर सवार होकर डहलगार्ड के टापू के भीतर जा सकते हो। शायद तुम पूछो कि रेलगाड़ी समुद्र को पार किस तरह करेगी। बात यह है कि जहाँ प्रायद्वीप के स्थल का सिरा है। वहाँ जहाज इस तरह आ लगता है कि रेल की पटरी जहाज के बीच में बिछी हुई पटरी से एक दम मिल जाती है। इससे रेलगाड़ी बड़ी आसानी से जहाज पर चढ़ जाती है। अगर तुम रेल के किसी डब्बे में बैठे हो तो तुम को नीचे उतरने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। तुम रेल पर सवार रहोगे और तुम्हारी रेल जहाज पर सवार हो जायगी।

कुछ ही देर में तुम्हारी रेलगाड़ी डहलगार्ड के टापू में जहाज से उतर कर इंजिन के ज़ोर से अपने आप चलने लगेगी।

इस सफर में तुम देखोगे कि डह्लगार्ड का देश एकदम सपाट है। पहाड़ी का नाम नहीं है। पर सब

लेखक डेन्मार्क के बच्चों के बीच में

कहीं सुन्दर चरागाह और सुनहरे खेत हैं। कहीं कहीं बीच में वृक्षों के बन हैं। हमारे देश के गावों में तो घर पास पास होते हैं लेकिन डह्लगाड के गाँव में घर दूर दूर फैले हुये हैं। ऐसा मालूम होता है कि यहीं देहात में
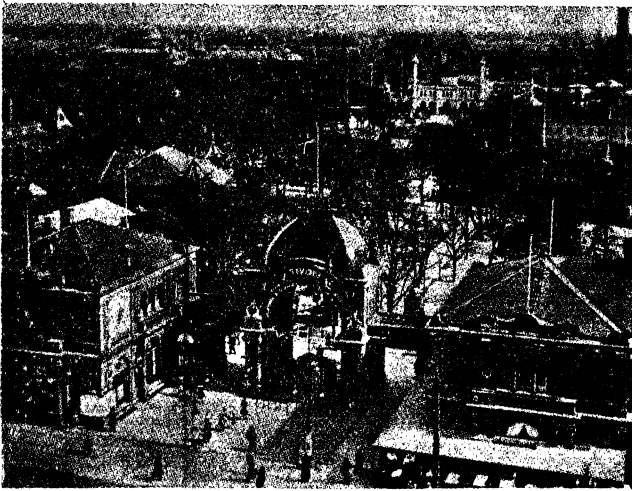
टिवोली का प्रवेश द्वार

गाँवों की जगह अलग अलग बड़े खेतवाले घर बिखरे हुये हैं।

डह्लगाड का घर पुराने ढंग का बना हुआ है।

इसके चारों ओर चरागाह और छोटे पेड़ों के झुंड हैं। घर चौकोर (आयताकार) है। ऊँची छत लाल खपड़ों से छाई हुई है। दीवारें सफेदे से पुती हुई हैं। घर के एक तरफ रहने के कमरे हैं। शेष तीन तरफ
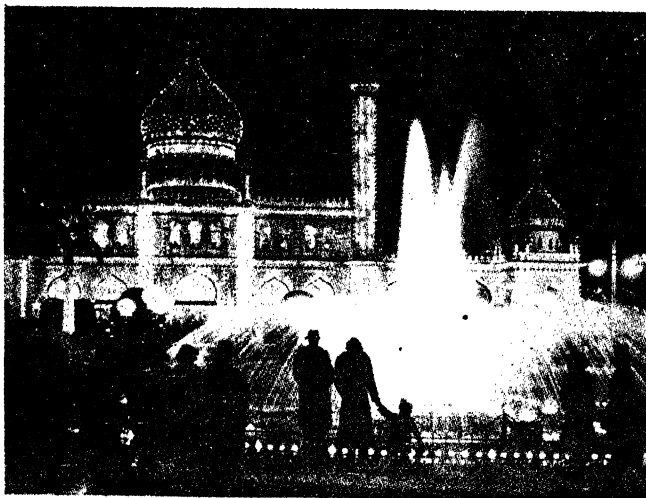
टिवोली का संगीत भवन बिजली से प्रकाशित

अनाज, चारा, ईंधन, गाड़ी आदि रखने के लिये कमरे बने हैं। इसी तरफ गायें, सूअर और मुर्गियाँ रहती हैं। घर के पास ही फुलवाड़ी और फलों का बगीचा है।

एक तरफ हवाई चक्की जानवरों के लिये दाना दलती रहती है। कुछ किसान बिजली के जोर से चलने वाली चक्की से दाना दलते हैं।
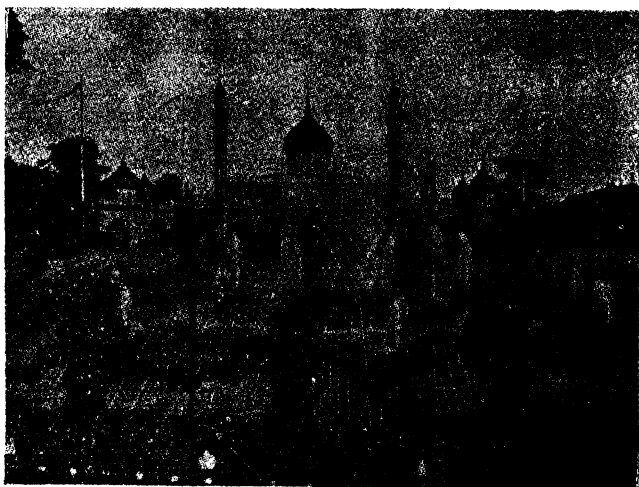
टिवोली का संगीत भवन

डह्लगार्ड के घर में सबसे ऊँची चिमनी पर सारस का घोंसला है। सारस के घोंसले को यहाँ के लोग बड़ा शुभ मानते हैं। इसलिये सारस को नहीं छेड़ता है। इसी से सारस इतने निडर हो गये हैं कि अपनी लाल लाल लम्बी टाँगों के बल वे सड़क पर भी ऐसे धीरे २

चलते हैं मानों सड़क उन्हीं की हो। वे गाड़ी आने पर भी इधर उधर नहीं हटते हैं। बेचारे गाड़ीवान को गाड़ी बचाकर हाँकनी पड़ती है और जब कड़ी सर्दी और बरफ पड़ती है तब सारस इससे बचने के लिये अफ्रीका
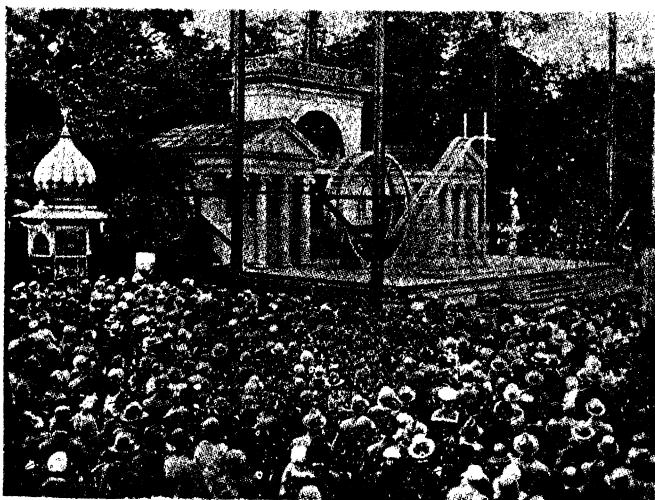
नटों की कला का महल

चले जाते हैं। तभी घर को गरम रखने के लिये चिमनी की सख्त जरूरत पड़ती है। उस समय डहलगार्ड का बाप घोंसले को हटाकर चिमनी साफ कर लेता है।
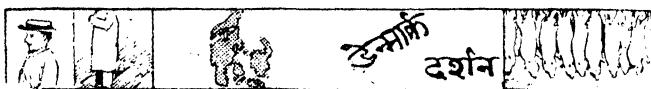
लेकिन गरमी आने पर सारस फिर लौट आते हैं। और घोंसला बना कर उसी स्थान पर अपना अधिकार जमा लेते हैं।

टिवोली के द्वारपाल

डहलगार्ड की पोशाक विलायती है। लेकिन वह अपने पैरों में लकड़ी के जूते (खड़ाऊँ) पहनता है। उसकी बहिन अना की मलमली टोपी से पीछे की ओर चोटी (पूंछ) सी निकली हुई है। उसकी कुरती और लहँगे के किनारों पर बढ़िया कढ़ाई (का काम) है।

देश दर्शन

डहलगार्ड का बाप एक बड़ा ग्वाला है। डेन्मार्क में अधिकतर ग्वाले ही रहते हैं। उसका बड़ा खेत झाड़ी या दीवार से घिरा हुआ नहीं है। फिर भी उसकी गायें इधर उधर मारी मारी नहीं फिरने पाती। गरमी के दिनों में वे चरने के लिये बाहर घास के खेतों में लाई जाती है। चार गायें रस्सी से एक दूसरे से बाँध दी जाती हैं। इस में वे फौज की तरह चलती मालूम होती हैं। खेत में हर एक गाय अलग अलग एक लम्बी जंजीर के द्वारा एक खूंटे से बाँध दी जाती है। दिन में तीन चार बार खूँटे की जगह बदल दी जाती है। इसमे गाय का पेट भर जाता है और वह दूसरी अच्छी घास को कुचल कर खराब भी नहीं कर पाती है। कभी कभी गाय खूंटा उखाड़ कर इधर उधर चरने लगती है। लेकिन डहलगार्ड और उसके साथी दौड़ कर जल्द उसे पकड़ लेते हैं और खूंटे को खूब ठोक देते हैं।

डहलगार्ड के बाप और घर वालों को बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। मुर्गी के बाँग देते ही बड़े सबेरे अँधेरे ही काम शुरू हो जाता है। सुस्ती दूर करने के लिये डहलगार्ड का बाप कुएँ से बाल्टी भर कर बर्फीले ठंडे

पानी से हाथ-मुँह धो डालता है। फिर वह लकड़ी के पौले (स्लीपर) पहन कर खट खट करता हुआ गौशाले में गाय दुहने जाता है। जब एक बाल्टी के दूध को एक बड़े बर्तन में उँडेल देता है। बाल या मैल छन्नी के ऊपर
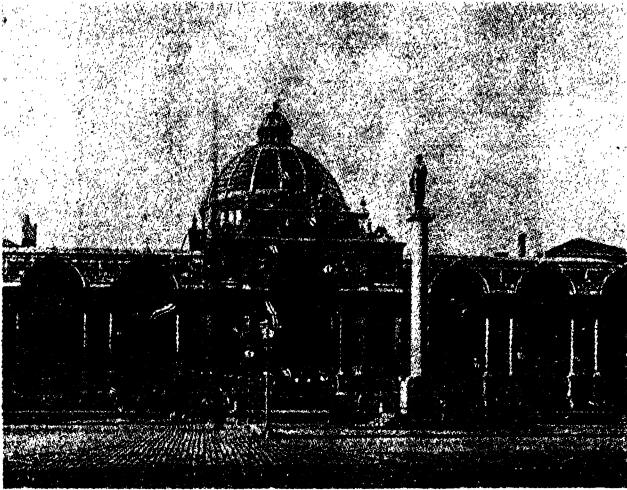
ग्लिप्टोथेक नाम का प्रसिद्ध स्थान

रह जाता है। साफ दूध बर्तन में पहुँचता है। जब सब दूध दुह जाता है और बड़े बड़े कनस्तर दूध से भर जाते हैं तब डह्लगार्ड का बाप उन्हें एक गाड़ी पर रख कर

बाहरी फाटक के पास ले आता है। दूसरे ग्वाले भी इसी तरह अपना अपना दूध फाटक के पास लाकर तैयार
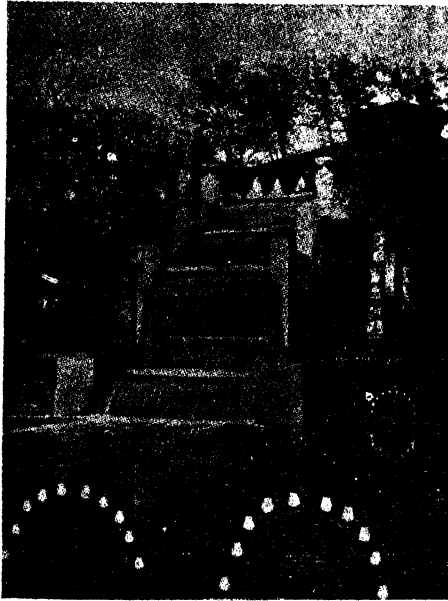
टिवोली का एक दृश्य

रहते हैं। फिर एक ग्वाले के खेत से दूसरे ग्वाले के खेत का चक्कर लगाने वाली मोटर लारियाँ इस दूध को लाद कर बड़ी डेरी (दूध के बड़े कारखाने) में पहुँचाती हैं।

यहाँ इस दूध को मशीन से मथ कर मक्खन निकाला जाता है। मक्खन विदेशों में बिकने के लिये भेज दि ा जाता है। मक्खन निकला हुआ दूध डह्लगार्ड और दूसरे ग्वालों को वापिस मिल जाता है। डह्लगार्ड यह दूध अपने सुअरों को पिलाता है। मक्खन निकला हुआ दूध पी पीकर जब सुअर बहुत मोटे हो जाते हैं तब वह उन्हें कटवाने के लिये कसाई घर में भेज देता है। डेन्मार्क के लोग सुअर का मांस बहुत खाते हैं। मक्खन और माँस बेचने से डह्लगार्ड और दूसरे ग्वालों को बड़ा लाभ होता है इससे वे अनाज और दूसरी आवश्यक चीज़ें बड़ी आसानी से बाहर से मंगा लेते हैं। वे अपनी मुर्ग़ियों को खिलाने के लिये अनाज भी बाहर से ही मंगाते हैं। आजकल यहाँ इतनी मुर्ग़ियाँ हैं कि यहाँ से हर साल करोड़ों अंडे बाहर भेजे जाते हैं।

डह्लगार्ड के देश वाले डेन लोग जिस तरह अधिक काम करते हैं उसी तरह वे खाते भी बहुत हैं। दिन में वे छः बार खाते हैं। चार बार से कम तो कोई भी नहीं खाता है। डह्लगार्ड पहली बार रोटी और मक्खन खाता है और क़हवा पीता है। डह्लगार्ड की रोटी काली

होती है और राई (काले जौ) के आटे से बनती है। वह छुरी से इसके छोटे छोटे टुकड़े कर लेता है। इन टुकड़ों के ऊपर वह छुरी से ही मक्खन लगा लेता है।

संगमरमर का गिरजाघर

कभी कभी वह मक्खन, चर्बी, दूध, शराब और अंडों का बना हुआ शोरवा खाता है। लेकिन नमकीन मछली,

कच्चा प्याज, मक्खन लगी रोटी और शोरबा डह्लगार्ड का प्रधान भोजन है। दोपहर को वह आलू, सुअर का माँस, मलाई और फलों का मुरब्बा खाता है। खाना खाने में डह्लगार्ड अंगुलियों का काम छुरी, चम्मच और कांटे से लेता है। इसलिये खाना खाने के बाद उसे हाथ धोने की जरूरत नहीं पड़ती है। वह कुल्ला भी नहीं करता है। सिर्फ रूमाल से अपने ओंठ पोंछ लेता है। खाना खाने के बाद डह्लगार्ड का बाप खेतों में घास काटने और उसे सुखाने का काम करता है। गरमी की ऋतु में घास का इकट्ठा करना बड़ा ज़रूरी है। सरदी में बरफ पड़ती है। उस समय वह गायों को बाहर नहीं ले जा सकता। घर में बाँध कर ही गायों को सूखा चारा खिलाना पड़ता है। बग़ीचे में थोड़ी देर आराम करने के बाद डह्लगार्ड और उसकी बहिन अना भी माँ बाप को दूध के बड़े बड़े बर्तन धोने और गाय का बाड़ा साफ करने में मदद देते हैं। लेकिन पढ़ने के लिये वे बराबर जाया करते हैं। उनके यहाँ कुछ स्कूल ऐसे हैं जिनमें गाय को मोटा ताज़ा रखने और सफाई के साथ दूध से अधिक से अधिक मक्खन निकालने का काम

सिखाया जाता है। डेन्मार्क के डेरी (गोरस सम्बन्धी) स्कूल दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। दूर दूर देशों के विद्यार्थी इन स्कूलों में इस कला को सीखने आते हैं।
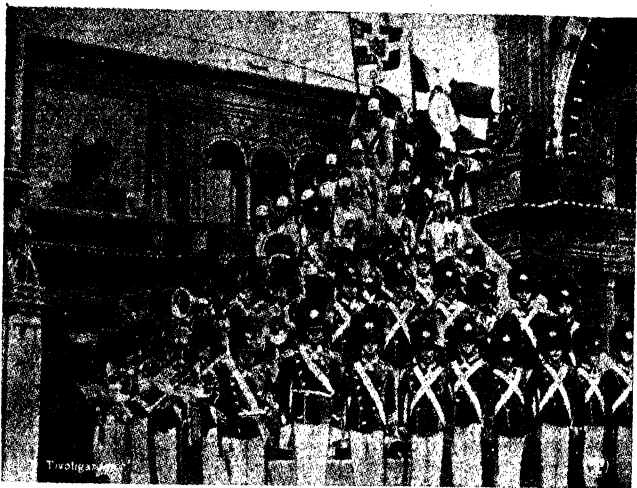
टिवोली उद्यान का एक दृश्य

डह्लगार्ड साल में कई त्योहार मनाता है। फसल कटने के समय डह्लगार्ड के बाप को और भी अधिक मेहनत करनी पड़ती है फसल कट जाने के बाद खूब खुशी मनाई जाती है। काट कर जो पहला पूला बंधता है वह चूहों के लिये छोड़ दिया जाता है। जिससे वे

दूसरे पूलों को न काटें। जो आखिरी पूला बंधता है वह फूलों से सजाया जाता है। सब काटने वाले लोग जलूस बना कर गाते बजाते हुये घर लौटते हैं। त्योहार के दिन लड़कों की छुट्टी रहती है। एक त्योहार में

टिवोली से टाउन हाल का दृश्य

डह्लगार्ड उसके छोटे साथी बड़े सवेरे छड़ी लेकर बाहर निकलते हैं। वे आजादी से सब घरों के कमरे में घुस जाते हैं। जो कोई उनको सोता मिलता है उसी को वे

छड़ी से मारना शुरू कर देते हैं। इनके डर से सब लोग सवेरे उठ जाते हैं। एक त्योहार गरमी की ऋतु के बीच (जून या ज्येष्ठ मास) में होता है। उस रात को रात भर हमारे यहाँ की होली की तरह आग जलती रहती है। लोग रात भर आग के चारों ओर नाचते रहते हैं। शोर इतना होता है कि कोई इस रात को सोने नहीं पाता है।

डह्लगार्ड को मेले में जाने का बड़ा शौक है। मेला उसके घर से कुछ दूर एक बड़े नगर में साल में कई बार लगता है। यहां किसान लोग छुट्टी मनाने के स.थ साथ मुर्गी, मक्खन, सुअर, गाय, घोड़े, अंडे और पनीर आदि कई चीज़ें बेचने का काम भी कर लेते हैं। मेले में डह्लगार्ड और अना को मीठी रोटी (केक) की दुकान बड़ी अच्छी लगती है। यहाँ शहद, बादाम, शकर और काली मिर्च मिली हुई रंगीन रोटी आदमी, जानवर और पेड़ों की सूरत की सजी हुई रक्खी रहती हैं।

जब कभी डह्लगार्ड अपने देश के सबसे बड़े शहर कोपेनहेगेन में जाता है तो वह टिकट लेकर टिवोली देखने अवश्य जाता है। यहाँ उसे तरह तरह का गाना
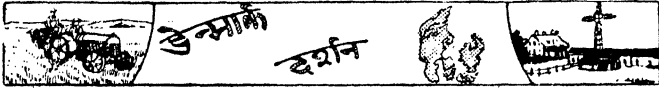
सुनने और बिजली से चलने वाले झूले पर झूलने को मिलता है। यहाँ वह बकरों से खींची जाने वाली छोटी गाड़ी और बादशाह के बाडी गार्डों की वर्दी पहन कर हाँकने वाले छोटे बच्चों की बनावटी शाही गाड़ी पर भी बैठता है। थोड़ी देर के लिये वह अपने को डेन्मार्क का राजा समझता है।

'देश-दर्शन' ग्रन्थमाला में अब तक नीचे लिखे अंक प्रकाशित हो चुके हैं :—

लंका, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैण्ड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र १, मिस्र भाग २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा और डेनमार्क।

जनवरी का अंक 'हालैण्ड-दर्शन' छप रहा है। इसी प्रकार प्रत्येक महीने किसी एक देश का सचित्र पूरा वर्णन रहता है। इस ग्रन्थमाला में २०० से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित होंगी। जो भूगोल के शुभचिन्तक साहित्य-प्रेमी हैं उन्हें इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि 'देश-दर्शन' के ग्राहक बन कर इन पुस्तकों से लाभ उठायें। वार्षिक मूल्य ४) है। मनीआर्डर से रुपये भेजने में डाक-व्यय चार आने की बचत होती है। वी० पी० मँगाने में चार आने वी० पी० खर्च लग जाता है।